Research Paper | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 10 |OCTOBER 2025

राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण में जोधपुर रियासत की भूमिका

डॉ. मनु सिंह [1] | रुकमा [2]

[1] सुपरवाइजर, राजनीति विज्ञान विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर.

[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर.

ABSTRACT:

भारत 1947 के बाद राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण में जोधपुर रियासत की राजनीतिक भूमिका बहुत ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुई। आजादी से पहले जोधपुर, जिसे मारवाड़ की राजधानी के रूप में जानते थे। वह राजस्थान की सबसे बड़ी रियासत के रूप में जानी जाती थी। जोधपुर रियासत के समय वहां का शासक हनुमंत सिंह था जिसने शुरुआत में पाकिस्तान से जुड़ने पर विचार किया लेकिन अंत में भारत संघ में शामिल होकर राजस्थान की ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारत की संघीय एकता का परिचय दिया जो स्वतंत्र भारत की राजनीतिक दिशा निर्धारण में एक निर्णायक सिद्ध हुई। 1947 के बाद जोधपुर रियासत लोकतांत्रिक राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई।

लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाने वालों में जोधपुर महाराजा हनुमंत सिंह व उनके उच्च अधिकारी शामिल थे। साथ ही जोधपुर क्षेत्र से प्रभावशाली नेता के रूप में उभर कर आए जिन्होंने राजस्थान विधानसभा व भारतीय संसद में अपनी उपस्थिति दी और इन सक्रिय नेताओं ने राजस्थान की राजनीति को नई दिशा प्रदान की।

KEYWORDS:

राजस्थान का एकीकरण, एकीकरण के चरण, जोधपुर रियासत, मारवाड़, शासन की भूमिका,संघ में विलय, बृहद राजस्थान।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
1st October 2025	2nd October 2025

परिचय -

राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण में जोधपुर रियासत स्थापत्य व सांस्कृतिक धरोहर तक ही सीमित नहीं थी बल्कि इन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जोधपुर रियासत ने राजपूताने की राजनीति को मारवाड़ की राजधानी के रूप में अपना परिचय दिया।

मारवाड़ की भौगोलिक पृष्ठभूमि

मारवाड़ शब्द में दो शब्दों का संयोग है 'मार' अर्थात् मरू (रेगिस्तान) और 'बाड़' का अर्थ 'रक्षक' है, इस प्रकार 'मारवाड़' का अर्थ है 'रेगिस्तान से रक्षित प्रदेश।"

मारवाड़ कालांतर में जोधपुर राज्य कहलाने लगा। यह राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा प्रदेश था। राजस्थान का लगभग एक चौथाई भू भाग अर्थात् 36120 वर्ग मील, जिसमें 73 वर्ग मील मारवाड़ मेरवाड़ा भी शामिल है। यह मारवाड़ का विस्तार था। इसकी अधिकतम लम्बाई ईशान कोण से नैऋत्यकोण तक 320 मील और अधिकतम चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक 170 मील है। जोधपुर राज्य वर्तमान राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में 24°37' और 27°42′ उत्तर अक्षांश तथा 70°5' और 75°22' पूर्व देशांतर के बीच विस्तृत था।

राजनीतिक शक्ति के केंद्र के रूप में उम्मेद भवन; मेहरानगढ़ का किला विशेष रूप से जाने जाते हैं। जब मुगल काल था तब जोधपुर के संघर्ष ने एक मजबूत राजनीतिक केंद्र बनाया। अनेक राजाओं ने दिल्ली दरबार में अपना प्रभाव छोड़ा तथा राजपूत की राजनीति में संतुलन बनाने का प्रयास किया। जोधपुर रियासत ब्रिटिश काल में भी राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र रही। जब आजादी की लड़ाई चल रही थी तब यहां के प्रजाजन व जागीरदारों ने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद सभी रियासतों का भारतीय संघ में विलय हुआ तब जोधपुर की निर्णायक भूमिका सिद्ध हुई जब महाराज हनुमंत सिंह का जोधपुर को भारत में विलय में राजस्थान की राजनीति को नई दिशा प्रदान की। इस प्रकार जोधपुर रियासत एक राजनीतिक केंद्र के रूप में भारतीय इतिहास में अपनी विशेष पहचान रखती है।

राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण- सन 1945 -46 में भारत की आजादी के शुभ विवाह के साथ ही राजपूताना क्षेत्र की रियासतों में एकीकरण की प्रक्रिया उत्पन्न होने लग गई थी। उसे समय कम से कम छोटी बड़ी 22 रियासतें थी। जिसमें जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, भरतपुर, कोटा, अलवर टोंक, डूंगरपुर, बूंदी, बांसवाड़ा, सिरोही, धौलपुर, किशनगढ़, प्रतापगढ़, झालावाड़, जैसलमेर, करौली, तथा शाहपुरा, मिलकर 19 रियासतें और कुशलगढ़ लावा व नीमराना स्वयं साहसी ठिकाने सम्मिलित थे। ब्रिटिश क्षेत्र में अजमेर मारवाड़ का क्षेत्र था।

इन रियासतों में 2,36,628 जागीरदार जिनका सरकार ने कब्जा कर रखा था। जागीरो की अनेक 40-50 किस्मे जैसे जागीर, सलामी, हजूरी, पत्ता, लालजी खानपान, खिदमत, नर्मदा, तनवा, मिल्क, बख्शीश, बापुती, पेट रोटी, मजेदार, चकराना व गुजरती रियासतों के शासन में अनेक भिन्नता देखने को मिली।

आजादी के समय देशी रियासतों के समक्ष तीन विकल्प थे।

1. भारत में शामिल हो जाए
2. पाकिस्तान में शामिल हो जाए , या
3. स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा जाए

ज्यादातर राजाओं का विचार राजपूताना की रियासतों को भारत में मिल जाने का था।उधर दूसरी तरफ पश्चिमी राजपूताना की एक-दो रियासतें पाकिस्तान में शामिल होने का मानस रखती थी लेकिन यह संभव नहीं हो सका।

मेवाड़ महाराणा का राजस्थान यूनियन बनाने का प्रयास था जिसके महाराणा गोपाल सिंह था। जयपुर के शासक मानसिंह द्वारा संघ बनाने का प्रयास किया गया। जिसके अध्यक्ष सरदार वल्लभभाई पटेल थे।कोटा के शासन द्वारा हाडोती संघ बनाने का प्रयास किया गया जिसके महाराज भीम सिंह थे। बांगड़ संघ निर्माण का प्रयास डूंगरपुर महारावल लक्ष्मण सिंह ने किया।

सरदार पटेल की व्यवहार कुशलता के फलस्वरुप अधिकांश राजाओं ने अधिमिलन पत्र पर

हस्ताक्षर कर दिए। हस्ताक्षर करने वालों में बीकानेर के सरदूल सिंह प्रथम थे जिनकी तिथि 7 अगस्त 1947 थी। राजस्थान में जोधपुर व धौलपुर राज्य ने बाद में 9 अगस्त और 14 अगस्त को अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर किए।

राजस्थान के एकीकरण के चरण

प्रथम चरण- मत्स्य संघ (17 मार्च 1948)

द्वितीय चरण -संयुक्त राजस्थान (25 मार्च 1948)

तृतीय चरण- संयुक्त राजस्थान राजस्थान संघ (18 अप्रैल 1948)

चतुर्थ चरण- वृहद राजस्थान (30 मार्च 1949)

पंचम चरण- संयुक्त वृहद राजस्थान (15 मई 1950)

षष्ठम चरण -सिरोही का राजस्थान में विलय (26 जनवरी 1950)

सप्तम चरण -वर्तमान राजस्थान (1 नवंबर 1956) अजमेर का राजस्थान में विलय।

जोधपुर रियासत- 1947 में भारत की आजादी के बाद 11 अगस्त को जोधपुर के महाराजा हनुमंत सिंह ने भारत के विलय के पत्र पर हस्ताक्षर किए। जोधपुर को 30 मार्च 1950 को वृहद राजस्थान के गठन में शामिल किया गया।

एकीकरण में जोधपुर रियासत की भूमिका-

1. सर्वप्रथम- जोधपुर के महाराज हनुमंत सिंह को शुरुआत में पाकिस्तान के साथ जुड़ने का कोई विचार नहीं था लेकिन बाद में भारत में विलय पर निर्णय लेने का विचार बन गया।

2. बृहद राजस्थान का निर्माण- राजस्थान के चार प्रमुख रियासतें जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर, बीकानेर को मिलाकर 30 मार्च 1950 को वृहद राजस्थान का गठन किया। उसी दिन से पूरे राजस्थान में राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

3. न्यायपालिका की स्थापना- जब वृहद राजस्थान का गठन हुआ उसके बाद जोधपुर में उच्च न्यायालय की स्थापना की गई। जिससे उनके प्रशासनिक व्यवस्था को काफी सुदृढ़ता मिली।

3.जोधपुर का इतिहास

उत्तर पश्चिम में भारतीय राज्य राजस्थान जिसकी राजधानी जयपुर उसका सबसे बड़ा दूसरा शहर जोधपुर है। जनसंख्या की दृष्टि से 2025 में जोधपुर शहर की आबादी 1.6 मिलियन है जिसमें जिला व संभाग स्तर पर प्रशासनिक मुख्यालय का कार्य करता है। मारवाड़ साम्राज्य जो पहले जोधपुर की प्राचीन राजधानी थी। 1459 में राठौड़ वंश के राजपूत राव जोधा ने इसकी स्थापना की। जोधपुर राज्य के अंतिम शासक महाराजा हनुमंत ने 11 अगस्त 1947 को भारत संघ 30 मार्च 1945 को 19 गठित राजस्थान जो पहले राजपूताना के नाम से प्रसिद्ध था।

प्रारंभिक इतिहास

1996 ईस्वी में घटियाला स्तंभ शिलालेख में प्रतिहार राजा ककुक्का का द्वारा स्थापित क्षेत्र की संपूर्ण जानकारी अवगत कराता है मारवाड़ साम्राज्य गुर्जर प्रतिहार का एक हिस्सा था जो 1100 ई. तक एक शक्तिशाली प्रतिहार राजा द्वारा राज किया। बाद में राठौर के साथ प्रत्तिहार राजाओं ने वैवाहिक संबंध बना लिए जिसमें मंडोर को राठौर सरदार चुंडा को प्रतिहारों ने दहेज के रूप में दे दिया जिसके कारण मंडोर में चुंडा का शासन स्थापित हो गया

इसमें तुगलक वंश के पतन का कारण भी था ।उसने जफर खान से बगावत की तथा उसके विरोध में मारवाड़ की रक्षा का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया जिसका परिणाम तुगलको से डीडवाना नागौर खाटू और अजमेर पर विजय प्राप्त की। जोधपुर की स्थापना के साथ ही राठौड़ वंश के राव जोधा ने दिल्ली सल्तनत से जितने भी आसपास के जो क्षेत्र थे उनको जीतने में सफलता प्राप्त कर ली। इस समय से जोधपुर मारवाड़ के नाम से जाना गया। राव जोधा मंडोर कस्बे से होने के कारण प्रारंभ में यही जोधपुर से इस राज्य की राजधानी बन गया। यह जोधा के जीवनकाल की भूमिका में महत्वपूर्ण योगदान रहा जोधपुर शहर दिल्ली को गुजरात से जोड़ता है जो एक रणनीतिक सड़क पर स्थित होने के कारण या रेशम तांबा चंदन खजूर अफीम आदि व्यापार के योग्य जितने भी वस्तुएं थी उसे फलते-फूलते व्यापार में लाभ में मदद मिली।

प्रारंभिक आधुनिक काल

जब 1581 में राव चंद्रसेन राठौर की मृत्यु हो गई थी तब इस राज्य पर मुगल राजा अकबर का अधिकार हो गया जिसके कारण मारवाड़ मुगलों का जागीरदार बन गया जिन्होंने आंतरिक स्वायत्तता का आनंद भी लिया और वफ़ादारी भी निभाई। जोधपुर व आसपास के लोग दुनिया के संपर्क में आए जिससे उनका काफी फायदा हुआ। क्योंकि उस समय कला व वास्तु कला के अनेक नई-नई शैलियां उभरकर आई। उत्तर भारत में अपनी पहचान बनाने के लिए स्थानीय व्यापारियों के नए-नए अवसर खुले। 1707 में महाराज अजीत सिंह को औरंगजेब की मृत्यु के ठीक बाद दुर्गादास ने राठौड़ ने महाराजा अजीत सिंह को गद्दी पर वापस बिठाया। इस प्रकार जो काफी लंबा राठौर का विद्रोह था वह समाप्त हो गया, जिसका परिणाम मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे कमजोर हुआ और जोधपुर दरबार षड्यंत्र से मुक्त ना हो सका। इसलिए उन्होंने परिस्थितियों का लाभ नहीं उठाया और मारवाड़ में संघर्ष की शुरुआत हो गई जिसमें मराठों ने अपना हस्तक्षेप शुरू कर दिया और मुगलों की जगह प्राप्त कर ली। इस क्षेत्र के राजा भी बन गए। 1755 में जय अप्पा सिंधिया नामक शासक ने राजस्थान के अनेक स्थानों को लूटा और नागौर पर भी आक्रमण किया। नागौर के पास ताऊसर नामक स्थान पर जय अप्पा ने अपनी सेना का ठहराव किया। चावत्ता कल्लन गाजी खान खोखर और दो तलाई कान सिंह ने अपनी इच्छा से जय अप्पा सिंधिया के हत्या की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। दोनों व्यापारियों के रूप के वेश बदलकर आए थे और वहां पर अपने व्यापार की एक दुकान खोली फिर अनेक दिनों तक उनकी नज़रें उन गतिविधियों पर थी। फिर एक दिन ज्योही मौका मिला तो 25 जुलाई 1755 को शुक्रवार के दिन 11:00 बजे खंजरों से जय अप्पा पर वार शुरू कर दिए और उसको मौत के घाट उतार दिया। जिसकी पेंटिंग मंडोर संग्रहालय में आज भी स्थित है और जोधपुर के सैनिकों से लड़ाई करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो गए। तब से एक कहावत प्रचलित हो गई है कि "खोखर बड़ा खुर्की हो गया। अप्पा जैसा डाकू अर्थात खोखर बड़े पेट वाले होते हैं जो अप्पा की तरह राक्षस खा जाते हैं। अप्पा सिंधिया की हत्या करने के बाद भी मराठा सैनिकों ने काफी महीना तक नागौर के पास युद्ध जारी रखा।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल

जब आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह थे तब उनके नेतृत्व में 1857 में पाली के राठौर शासको द्वारा एक बड़ी क्रांति हुई लेकिन कर्नल होम्स के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने विद्रोह को कुचल दिया और शांति बहाल हो गई। ब्रिटिश शासन के काल में जोधपुर राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजपूताना में सबसे बड़ा राज्य था जिसका क्षेत्रपाल 19, 4241901 वर्ग किलोमीटर (360,11 वर्ग मील) था और उसमें स्थित जनसंख्या 4473 759 थी इसके व्यापारी वर्ग मारवाड़ी पूरे भारत में व्यापार के क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।

आजादी के बाद

1947 में जब भारत को आजादी मिली तब राज्य संघ में शामिल हो गया। विभाजन के समय हनुमंत सिंह का विचार संघ में शामिल होने का नहीं था लेकिन सरदार वल्लभभाई की चतुरता के कारण शासक हनुमंत सिहं का वापस मानस बन गया और जोधपुर राज्य को भारतीय गणराज्य में सम्मिलित कर लिया गया। इसके बाद राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 प्रभावी हो गया जिसे राजस्थान राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान को राजपूताना के नाम से जानते थे। राजस्थान के एकीकरण के पहले राजस्थान में 19 रियासत थी व तीन ठिकाने थे जिनका एकीकरण 7 चरणों में हुआ। इसमें कुल समय 8 साल 7 महीने 14 दिन लगे थे। जोधपुर जयपुर जैसलमेर और बीकानेर रियासतें मिलकर वृहद राजस्थान संघ बना।

4.भारत विभाजन-

अंग्रेजी सरकार से स्वतंत्रता मिलने का मुख्य कारण भारत व पाक विभाजन 1947 था जिसमें मुस्लिम बहुसंख्यक पाकिस्तान में जाना चाहते थे और हिंदू बहुतसंख्यक हिंदुस्तान में रहना चाहते थे। भारत में उसे समय कुल 562 रियासतों को स्वतंत्रता प्राप्त थी कि वह अपनी मर्जी से भारत या पाकिस्तान में शामिल हो सकते हैं। भारत विभाजन योजना की शर्तें पूरी करने वाली राजस्थान में चार रियासतें क्रमशः जोधपुर बीकानेर जयपुर वह उदयपुर थी। इसमें जोधपुर रियासत राजस्थान में नहीं मिलना चाहती थी। उनकी इच्छा पाकिस्तान से मिलने की थी।

5. तत्कालीन परिस्थितियां - भारत के स्वतंत्रता के समय जोधपुर के महाराजा हनुमंत सिंह जोधपुर को पाकिस्तान में मिलने की मनसा रखते थे। पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना के बातों में आकर महाराज हनुमंत सिंह ने मारवाड़ जो की पुरानी राजधानी थी

जिसको पाकिस्तान में शामिल करना चाहते थे लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल की बुद्धिमत्ता के कारण महाराजा का विचार वापस बदल गया।

REFERENCES

1. जैन डॉ. हुकम चंद -राजस्थान का इतिहास संस्कृति परंपरा एवं विरासत (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी) पृष्ठ संख्या 266-277.

2. कटारिया डॉ. सुरेंद्र -राज्य प्रशासन 9वा संस्करण (मलिक एंड कंपनी)1950 पृष्ठ संख्या 26 – 27

3. विलियम बर्टन- द प्रिंस ऑफ़ इंडिया.

4. गुहा रामचंद्र- इंडिया आफ्टर गांधी -द हिस्ट्री ऑफ़ द वर्ल्ड लार्जेस्ट डेमोक्रेसी.

5. .(i) ओझा गौरीशंकर हीराचंद जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड 1, पृ. 3, वैदिक मंत्रालय, अजमेर, 1938 ई. (ii) गहलोत जगदीशसिंह: मारवाड़ राज्य का भूगोल, पृ. 5, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1937 ई.

6. एनुअल एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट ऑव जोधपुर स्टेट-1945-46 ई., पृ. 1, जोधपुर सरकार.

7. रेउ विश्वेश्वरनाथ: मारवाड़ का इतिहास, पृ. 1, आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेन्ट, जोधपुर, 1938 ई.

8. ओझा गौरीशंकर हीराचंद जोधपुर राज्य का इतिहास: खण्ड-1, पृ. 3-4

9. "जोधपुर शहर की जनसंख्या 2024. साक्षरता और हिंदू मुस्लिम जनसंख्या". www.census2011.co.in. 31 मार्च 2024 को पुनःप्राप्त.

10. "जोधपुर. इतिहास, संस्कृति और पर्यटक आकर्षण. ब्रिटानिका". www.britannica.com. 25 मार्च 2024. 31 मार्च 2024 को लिया गया।

11. "जोधपुर के विलय का विचित्र मामला". www.dnaindia.com 3 अप्रैल 2024 को पुनःप्राप्त.

12. "राजस्थान दिवस 2024: क्षेत्रफल के हिसाब से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य कैसे बना?". jagranjosh.com 30 मार्च 2024 8 अप्रैल 2024 को पुनःप्राप्त.

13. सिंह, एम.आर. (1972). प्रारंभिक पुराणों में भौगोलिक आँकड़े. एक आलोचनात्मक अध्ययन पंथी पुस्तक. पृ. 131.

14. मोहम्मद हबीब, खालिक अहमद निजामी (1970). भारत का व्यापक इतिहास भाग 5. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली. पृ. 811.

15. .कोठियाल, तनुजा (2016). नोमैडिक नैरेटिव्सः ए हिस्ट्री ऑफ़ मोबिलिटी एंड आइडेंटिटी इन द ग्रेट इंडियन.कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 76. आईएसबीएन 9781107080317 राठौड़ गढ़ों पर दिल्ली.

16. धनंजय सिंह (1994)। मारवाड़ का घरानाः जोधपुर की कहानी। लोटस कलेक्शन। आईएसबीएन 9788174360021.

17. राजनीतिक जागृति और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राजस्थान के विशेष संदर्भ में, पृष्ठ 28-35.

18. .डॉ. एम.एस. नवराणे (1999). राजपूताना के राजपूतः मध्यकालीन राजस्थान की एक झलक. एपीएच पब्लिशिंग. आईएसबीएन 81-7648-118-1.